नमाज़

लेखक :

मौलाना मुख्तार अहमद नदवी

अनुवादक :

सैय्यद ज़ाहिद अली

The Cooperative Office For Call & Guidance to Communities at Naseem Area
Riyadh -Al-Manar Area - Front of O.P.D of Al-Yamamah Hospital
Tel.: 2328226 - 2350194 - Fax: 2301465
P.O.Box: 51584 Riyadh 11553

Hindi
107

नमाज़

लेखक :
मौलाना मुख्तार अहमद नदवी

अनुवादक :
सैय्यद ज़ाहिद अली
एवं
मुहम्मद ताहिर मुहम्मद हनीफ

संघीय कार्यालय आमन्त्रण व प्रदर्शक, बतहा

पो॰ बक्स २०८२४, रियाध ११४६५
दूरभाष : ४०३०२५१ – ४०३४५१७ – ४०३१५८७,
फैक्स ४०५९३८७

अनुबन्धित

मं त्रिमण्डल इस्लामिक विष्य, औकाफ एवं आमन्त्रण व निर्देश

प्रिन्टिंग अधिकार कार्यालय के लिए सुरक्षित

दो शब्द

सभी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो अखिल जगत का प्रभु है। अल्लाह की कृपा हो मुहम्मद स॰अ॰व॰ पर, उनके परिवार एवं उनके साथियों पर।

प्रिय बंधुओं! यह पुस्तिका जो आपके हाथ में है। यह अल्लाह की महान कृपा के कारण ही पूर्ण हुई है। हमारे प्रिय साथियों ने हम से कई बार नमाज़ के तरीके की प्रमाणित किताब की हिन्दी भाषा में आवश्यकता पर ध्यान दिलाया था। जब हमारे सामने " स्वलातुन्नबी " श्री मुख्तार अहमद नदवी द्वारा लिखित आयी। तो हमने देखा कि यह संक्षिप्त पुस्तिका में नमाज़ की विधि सरल भाषा में सुन्नत से प्रमाणित लिखी गयी है। उसी समय हमने इसका अनुवाद शुरू कर दिया।

इस पुस्तिका में केवल हमने उन दुआओं का अरबी उच्चारण हिन्दी में लिखा है, जो कुरआन करीम की सूरः में नहीं हैं, केवल हदीस की किताबों में ही उपलब्ध हैं। फिर भी हम पाठकों से निवेदन करेंगे कि आप अरबी जानने वाले से उनका उच्चारण सही करा लें, क्योंकि अरबी का उच्चारण हिन्दी में लिखना कठिन है। हमने पूर्ण प्रयत्न किया है कि उच्चारण सही हो।

हमारा यह छोटा– सा प्रयत्न अगर किसी को सही नमाज़ अदा करने का मार्गदर्शन कर सका, तो हम समझेंगे कि हमारा यह कर्म अल्लाह को स्वीकार हो गया।

हम संधीय कार्यालय संदेश व मार्गदर्शन, विदेश विभाग, बतहा, के आभारी हैं कि उन्होंने इस पुस्तक को आप तक इस अवस्था में

पहुंचाने में सहायता की और वहाँ के सभी कर्मचारियों का भी आभारी हूं, जिन्होंने इस कार्य में हमारी सहायता की।

हम आपसे अन्त में अनुरोध करेंगे कि जब भी दुआओं के लिए हाथ उठाऐं, तो अल्लाह के इन सेवकों को अवश्य याद रखें।

अल्लाह आपकी हर इबादत को स्वीकार करे।

अन्त में अल्लाह से प्रार्थना है कि वह हमको सीधा मार्ग दिखाए।

अल्लाह ही के लिए सभी प्रशंसा है।

आपका भाई

सैय्यद ज़ाहिद अली एवं मो॰ ताहिर

रियाद

प्रकाशक

दारूस्सलफ़िया की प्रसिद्ध पुस्तक " स्वलातुन्नबी " का संक्षिप्त सरल प्रकाशन सरकारी स्कुलों और इस्लामी मकतबों में शिक्षा पाने वाले मुसलमान बच्चों और बच्चियों और साधारण मुसलमान की आवश्यकता को ध्यान में रख कर संकलित किया गया है।

किताब में नमाज़ की सभी आवश्यक मसलों और दुआओं को संकलित कर दिया गया है, और उसे आसान बनाने का प्रयत्न किया गया है। साथ ही हर मसले को किताब व सुन्नत के प्रकाश में सिद्ध किया गया है। इस प्रकार यह संक्षिप्त पुस्तिका रसूलल्लाह सल्लल्लाहु, अलैहे वसल्लम की नमाज़ का सही प्रमाणित संकलन बन गया है। अल्लाह तआ़ला लेखक के इस धार्मिक प्रयत्न को स्वीकार करने और इस के द्वारा मुसलमानों को सुन्नत-ए-नबवी के अनुसार नमाज़ अदा करने की तौफीक़ प्रदान करे, आमीन।

अकरम मुख्तार

मैनेजर, दारूस्सलफ़िया, बम्बई

बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम

इस्लाम के स्तम्भ

इस्लाम की आधारशिला पाँच चीज़ों पर आधारित है।

१- कलमा शहादत (गवाही का वाक्य)

اشهد أن لا اله الا الله وأشهد أن محمدا عبده ورسوله .

" मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं और गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।"

२- दिन और रात में पाँच वक़्त की नमाज़ अदा करना।

३- ज़कात अदा करना।

४- रमज़ान के महीने के रोज़े रखना।

५- अगर ख़र्च करने योग्य धन है और तन्दरूस्त है तो अल्लाह के घर का हज करना। (मुस्लिम शरीफ)

नमाज़

नमाज़, दिन और रात में पाँच समय अनिवार्य है। ये नमाज़ें हैं फ़जर, ज़ोहर, असर, मग़रिब और इशा। ज़ोहर और असर दिन की नमाज़ें हैं, मग़रिब और इशा रात की नमाज़ें हैं, और फ़जर सुबह की नमाज़ है।

नमाज़ की रकाअतों की संख्या

१– फज़र की नमाज़ :– पहले दो सुन्नतें और फिर दो फर्ज़।

२– ज़ोहर की नमाज़ :– पहले चार सुन्नतें, फिर चार फर्ज़ और फिर दो सुन्नतें।

३– असर की नमाज़ :– चार फर्ज़।

४– मग़रिब की नमाज़ :– तीन फर्ज़, दो सुन्नतें।

५– इशा की नमाज़ :– चार फर्ज़, दो सुन्नतें, एक या तीन रकाअत वित्र।

दिन और रात की फर्ज़ नमाज़ों में रकाअतों की संख्या सत्रह और सुन्नत नमाज़ों की रकाअतों की संख्या बारह एवं वित्र एक अथवा तीन रकाअत है।

वज़ू का तरीका

बिना वज़ू के नमाज़ नहीं होती (मुस्लिम शरीफ)। वज़ू को बिस्मिल्लाह कह कर शुरू करना आवश्यक है। बिस्मिल्लाह कहने के बाद तीन बार दोनों हाथ कलाईयों तक धोयें। फिर एक चुल्लु पानी लेकर आधे से कुल्ली करें और आधा नाक में डालें और नाक को बायें हाथ से साफ करें, इसी प्रकार तीन बार करें। कुल्ली करने और नाक में पानी डालने के लिए अलग-अलग पानी लेना भी जायज़ है (बुख़ारी)। फिर तीन बार मुँह धोयें और मुँह इस प्रकार धोयें कि पानी को ठुड्डी के नीचे दाढ़ी में डालते हुए लायें और दाढ़ी के बाल में खिलाल करके पानी पहुँचा दें (त्रिमज़ी शरीफ)। और हाथों की उंगलियों का खिलाल करें (अबु दाऊद)। अगर अँगूठी पहने हुए हैं, तो उसको हिलालें (मिशकात)। फिर सिर का मसह इस तरह करें कि दोनों हाथों को सिर के अगले भाग से शुरू करके पीछे गुद्दी तक ले जायें, फिर वहाँ से उसी स्थान पर वापस ले आयें जहाँ से शुरू किया था (बुख़ारी शरीफ)। फिर

कानों का मसह इस प्रकार करें कि शहादत की दोनों उँगलियों को दोनो तरफ के कानों के अन्दर डालकर कानों के पीछे अंगूठे के साथ मसह करें (मिशकात) । और कानों के मसह के लिए नया पानी लें (बलूगुलमराम) । फिर अपना दाहिना पाँव और उसके बाद बायाँ पाँव टखनों तक तीन बार धोयें और पाँव की उंगलियों के बीच ख़िलाल करें , गरदन का मसह करना सिद्ध नहीं है।

वज़ू के बाद की दुआ

वज़ू के बाद की दुआ आपको अरबी में पढ़नी है। अत: उसको किसी प्रकार अरबी में याद कर लें।

أشهد أن لااله الا الله وحده لاشريك له واشهد أن محمدا عبده ورسوله ؛ اللهم اجعلني من التوابين واجعلني من المتطهرين .

उसका अर्थ यह है :–

" में गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं , वह अकेला है , उसका कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद (स०अ०व०) उसके बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह!

मुझे तोबा करने वालों में से बना दे और खूब पाक व साफ रहने वालों में बना दे।

इन चीज़ों से वज़ू टूट जाता है

१- गहरी नींद सो जाने से । (अबू दाऊद)
२- नीचे से हवा निकल जाने से। (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद)
३- मस्ती (नशा हो जाने) व बेहोशी से। (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद)
४- नापाकी से।(त्रिमिज़ी, अबू दाऊद)
५- मूत्र व शौच से। (बुखा़री व मुस्लिम)
६- स्त्री को छूने से। (सूरह निसा: ४३)
७- लगातार खून बहने से। (बुखा़री)

मोज़ों पर मसह

स्थाई आदमी एक दिन–एक रात और यात्री तीन दिन और तीन रात अपने मोज़ों पर मसह कर सकता है (मुस्लिम)। मसह का तरीक़ा यह है कि दोनों

हाथों की पाँचों उँगलियों को पानी से भिगोएं और दोनों पाँव के मोजों से शुरू करके टख़नों के ऊपर तक खींच ले जाएं। मसह पाँव के ऊपर करना सुन्नत है, नीचे नहीं । (त्रिमिज़ी)

तयम्मुम का वर्णन

अगर किसी कारण से नमाज़ के समय पानी न मिले या पानी के प्रयोग से कोई नुकसान पहुँचने का पूरा भय हो तो पाकी की नीयत से पाक मिट्टी के साथ अपने हाथों को मलना और फिर मुँह पर हाथ फेरने को तयम्मुम कहते हैं। जिसका तरीका यह है कि तयम्मुम की नीयत से बिस्मिल्लाह कहकर दोनों हाथों को मिट्टी पर मारना फिर फूँक कर मुँह और दोनों हाथों पर मले। (बुख़ारी)

अज़ान का वर्णन

रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल को हुक्म दिया कि अज़ान के वाक्य दो-दो

बार कहें , मगर शुरू में अल्लहु अकबर चार बार कहें और इकामत के वाक्य एक–एक बार, मगर शुरू और आख़िर में अल्लाहु अकबर दो–दो बार कहें और क़द क़ामतिस्सलाह दो बार कहें। (बुख़ारी व मुस्लिम)

अज़ान के वाक्य इस प्रकार हैं :–

अल्लाहु अकबर – अल्लाहु अकबर।
(अल्लाह सबसे बड़ा है – अल्लाह सबसे बड़ा है)
अल्लाहु अकबर – अल्लाहु अकबर।
(अल्लाह सबसे बड़ा है – अल्लाह सबसे बड़ा है)
अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह।
(मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजने योग्य नही)
अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह।
(मैं गवाही देता हुँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजने योग्य नही)
अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूल अल्लाह।
(मैं गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद स॰अ॰व॰

अल्लाह के रसूल हैं)

अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूल अल्लाह।

(मैं गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद स॰अ॰व॰ अल्लाह के रसूल हैं)

हअइय्या अलस्सलाह। हअइय्या अलस्सलाह।

(आओ नमाज़ के लिए। आओ नमाज़ के लिए)

हअइय्या अललफलाह। हअइय्या अललफलाह।

(आओ निजात के लिए। आओ निजात के लिए)

अल्लाहु अकबर – अल्लाहु अकबर,

(अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है)

लाइलाहा इल्लल्लाह।

(अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने के योग्य नहीं)

फज़र की अज़ान में हअइय्या अललफलाह के बाद दो बार यह वाक्य कहना हैं –

अस्सलातु ख़ैरूमिन्ननौम।

(नमाज़ नींद से अच्छी है)

इक़ामत (तकबीर) के वाक्य

अल्लाहु अकबर – अल्लाहु अकबर

अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह
अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूल अल्लाह
हअइय्या अलस्सलाह
हअइय्या अललफ़लाह
क़द क़ामतिस्सलात – क़द क़ामतिस्सलात
अल्लाहु अक़बर – अल्लाहु अक़बर
लाइलाह इल्लल्लाह।

अब्दुल्लाह बिन उमर फरमाते हैं कि रसूल अल्लाह (स०अ०व०) के समय में अज़ान के वाक्य दो–दो बार और तकबीर एक–एक बार कही जाती थी, केवल क़द क़ामतिस्सलात दो बार कही जाती थी।(अबू दाऊद व निसाइ)

अज़ान देते समय शहादत की उँगलियाँ दोनो कानों के छेद में डालनी चाहिए। (इब्ने माजा)
' हअइय्या अलस्सलाह ` कहते समय सीधी ( दायें ) ओर , और ' हअइय्या अललफ़लाह ` कहते समय उल्टी (बायीं) ओर गर्दन घुमानी चाहिए।(इब्ने माजा)

अज़ान का उत्तर

अज़ान देने वाला (मोअज़्ज़िन) जिस प्रकार से अज़ान दे, उसका उसी प्रकार से उत्तर देना चाहिए, केवल ' हअइय्या अलस्सलाह ` और ' हअइय्या अललफ़लाह ` के उत्तर पर लाहौला वला कूव्वता इल्ला बिल्लाहि कहना चाहिए। (मुस्लिम)

इक़ामत (तकबीर) का उत्तर

अज़ान की ही तरह इक़ामत (तकबीर) का भी उत्तर देना चाहिए, केवल ' क़द क़ामतिस्सलात ` के उत्तर में " अक़ामाहल्लाहु वा आदा महा " कहना चाहिए। (अबू दाऊद)

अज़ान के बाद की दुआ

रसुल अल्लाह स०अ०व० का इरशाद है कि जब अज़ान देने वाला (मोअज़्ज़िन) की आवाज़ सुनो

तो जैसे वह कहता है वैसे ही उसको उत्तर दो। अज़ान जब समाप्त हो जाए तो मुझ पर दरूद भेजो, जो व्यक्ति मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा अल्लाह उस पर दस बार कृपा (रहम) अवतरित (नाज़िल) करेगा। (मुस्लिम)

दरूद शरीफ

इसको अरबी में आप पूरी तरह से याद कर लें।

اللهم صل على محمد وعلى ال محمد كما صليت على ابراهيم وعلى ال ابراهيم انك حميد مجيد ـ اللهم بارك على محمد وعلى ال محمد كما باركت على ابراهيم وعلى ال ابراهيم انك حميد مجيد .

ऐ मेरे प्रभु। कृपा (रहम) भेज मुहम्मद पर और मुहम्मद के परिवार पर जैसे रहमत (कृपा) भेजी तूने इब्राहीम पर और इब्राहीम के परिवार पर, बेशक तू महिमा और गुणगान के योग्य है। ऐ प्रभु! बरकत भेज मुहम्मद पर और मुहम्मद के परिवार पर, जैसे बरकत भेजी तूने इब्राहीम पर और इब्राहीम के

परिवार पर, बेशक तू महिमा और गुणगान के योग्य है।

दरूद शरीफ के बाद यह दुआ पढ़े, इसको भी आपको अरबी ही में याद करना है।

اللهم رب هذه الدعوة التامة والصلاة القائمة ات محمد الوسيلة والفضيلة وابعثه مقاما محمودا الذي وعدته (صحيح البخاري)

ऐ अल्लाह इस पूरी दुआ और खड़ी होने वाली नमाज़ के प्रभु! प्रदान कर, मुहम्मद को वसीला (स्वर्ग) और महिमा और उनको उस स्थान महमूद में भेज, जिसका तूने वायदा किया है। (बुख़ारी)

जो व्यक्ति यह दुआ पढ़ेगा, उसको आप (स०अ०व०) की शफाअत क़यामत के दिन प्राप्त होगी।

اشهد أن لااله الا الله وحده لاشريك له واشهد ان محمدا عبده ورسوله رضيت بالله ربا وبمحمد رسولا وبالاسلام دينا

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं और बेशक मुहम्मद (स०अ०व०) उसके बन्दे और रसूल हैं। मैं स्वीकार करता हुँ अल्लाह की प्रभुता का, और मुहम्मद के रसूल (ईश दूत) होने

का और इस्लाम के धर्म (दीन) होने का (मुस्लिम)।
इन तीनों दुआओं को (दरूद शरीफ और उपरोक्त दोनों दुआओं) पढ़ना उत्तम है।

मस्जिद में प्रवेश होते समय की दुआ

मस्जिद में पहले सीधा (दाहिना) पैर रखकर अरबी में यह दुआ पढ़नी चाहिए।

اللهم افتح لي أبواب رحمتك

" ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी कृपा के द्वार खोल दे "।

मस्जिद से बाहर निकलते समय की दुआ

मस्जिद से निकलते समय पहले उल्टा (बायाँ) पैर बाहर निकालना चाहिए, फिर यह दुआ अरबी में पढ़ना चाहिए।

اللهم اني أسئلك من فضلك (مسلم)

" ऐ अल्लाह तुझ से तेरी दया (फ़ज़्ल) माँगता हूँ "। (मुस्लिम)

नमाज़ का मसनून तरीक़ा

नमाज़ शुरू करने से पहले सीधे किबला (मक्का या काबा) की ओर मुँह करके खड़ा होना चाहिए (बुख़ारी)। और दिल में नमाज़ की नीयत करनी चाहिए (बुख़ारी) । अपने दोनों हाथ कन्धों के बराबर उठाकर 'अल्लाहु अकबर' कहना चाहिए (बुख़ारी)। और सीधा (दाहिना) हाथ उल्टे (बायें) हाथ पर अपने सीने पर रखकर बाँधना चाहिए। और सिरी' अर्थात धीरे से यह दुआ पढ़नी चाहिए।

दुआ – ए – इस्तिफ़ताह

'अल्लाहु अकबर' कहने के बाद जब हाथ सीने पर बाँध लें, तो यह दुआ पढ़नी चाहिए।

اللهم باعد بيني و بين خطاياى كما باعدت بين المشرق والمغرب ، اللهم نقني من الخطايا كما ينقى الثوب الابيض من الدنس ، اللهم اغسل خطاياى بالماء والثلج والبرد (بخاري ومسلم)

अथवा यह दुआ पढ़नी चाहिए।

سبحانك اللهم وبحمدك وتبارك اسمك وتعالى جدك و جل ثنائك

ولااله غيرك (أبو داود)

" सुब्हानाका अल्लाहुम्मा व बिहम्दिका व तबारकस्मोका व तआला जद्दोका वजल्ला सनाओका व लाइलाहा गैरूक। "

इसके बाद फिर " अऊजूबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम " पढ़ें, उसके बाद बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर सूरह फातेहा शुरू कर दें।

<u>ध्यान देने योग्य बात :-</u> जहरी (ज़ोर से) नमाज़ों में बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम ज़ोर से और सिर्री (धीरे से) नमाज़ों में चुपके से पढ़ना सिद्ध है। अगर हर नमाज़ में चुपके से पढ़े तब भी जायज़ है। (निसाई)

हर नमाज़ में बिस्मिल्लाह पढ़कर सूरह फ़ातिहा पढ़नी चाहिए। और फर्ज़, सुन्नत और नफिल की हर रकआत में इमाम और मुक़तदी और अकेले सबके लिए सूरः फातेहा पढ़ना फर्ज़ है, इसके बिना नमाज़ नही होती। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सूरः अल फातिहा

यह कुरआन करीम की पहली सूरः है। इसको याद करना बहुत ज़रूरी है।

الحمد لله رب العالمين ۔ الرحمن الرحيم ۔ مالك يوم الدين ۔ اياك نعبد واياك نستعين ۔ اهدنا الصراط المستقيم ۔ صراط الذين انعمت عليهم ؛ غير المغضوب عليهم ولاالضالين ۔ امين

अर्थ :– प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो अखिल जगत का प्रभु है, अत्यन्त करूणामय और दया करने वाला, बदला दिये जाने वाले दिन का मालिक। हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं। हमें सीधा मार्ग दिखा, उन लोगों का मार्ग जो तेरे कृपा पात्र हुए, जो प्रकोप के भागी नही हुए और भटके हुए नहीं हैं।

जहरी (ज़ोर से) नमाज़ों में वलद्वालीन के बाद इमाम व मुक़तदी दोनों आवाज़ खीच कर जोर से " अमीन " कहें (त्रिमिज़ी व अबू दाऊद)। और सिरी (धीरे से) नमाज़ों में चुपके से कहें। इसके बाद कुरआन की जो भी सूरः या कम से कम तीन

आयात लगातार आसान मालूम हो, इमाम जहरी नमाज़ों में जोर से और सिर्री नमाज़ों में चुपके से पढ़े। (बुख़ारी)

सूरा: अल–इख़लास

قل هو الله أحد الله الصمد لم يلد ولم يولد ولم يكن له كفوا أحد

अर्थ:– कहो वह अल्लाह यकता है। अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मोहताज हैं। न उसकी कोई सन्तान है, और न वह किसी की सन्तान। और कोई उसका समकक्ष नहीं है।

रूकूउ का वर्णन

कुरआन करीम की सूरः या आयात के पढ़ने के बाद रूकूउ करना चाहिए। रूकूउ में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए –

रूकूउ करते समय 'अल्लाहु अकबर' कहकर, दोनों हाथों को कन्धों तक उठायें, इसे रफ़ा–ए–यदैन कहते हैं। (मिशकात)

रूकूउ में पीठ बिल्कुल सीधी हो और सिर उससे ऊँचा या नीचा न हो, और दोनो हाथों की हथेलियों को दोनों घुटनों पर रखें। (बुख़ारी व मुस्लिम)

उँगलियाँ घुटनों पर फैली हुई रखें। हाथों को सीधा तानें, और बगल से अलग रखें और घुटनों को मज़बूती से पकड़े रहें। (अबू दाऊद)

रूकुउ की दुआ

سبحان ربي العظيم

सुबहान रब्बिअलअज़ीम (तीन बार) (अबू दाऊद)
पवित्र है मेरा महानता वाला प्रभु

क़ोम: की दुआएँ

रूकुउ से सीधा खड़े होने को क़ोम: कहते हैं। रूकुउ से सीधे खड़े होते हुए रफ़ा–ए–यदैन करें और सीधे खड़े हो जाएं। अगर नमाज़ी अकेला है, और या तो

वह इमाम है , तो उसे निम्नलिखित दो दुआएं पढ़नी है :–

سمع الله لمن حمده

१ - समीअल्लाहु लिमन हमिद:
अल्लाह ने उसकी दुआ सुन ली, जिसने उसकी प्रशंसा की।

ربنا ولك الحمد

२ - रब्बना व लकलहमद
ऐ हमारे प्रभु तेरी ही प्रशंसा है।

और यदि नमाज़ी मुक़तदी है तो उसको निम्नलिखित दुआ पढ़नी है :–

ربنا لك الحمد حمدا كثيرا طيبا مباركا فيه

रब्बना लकलहमदो हमदन कसीरन तय्यबन मुबारकन फीह:
ऐ हमारे प्रभु तेरे ही लिए प्रशंसा है, अत्याधिक प्रशंसा, पवित्र और उसमें अधिकता दी गयी है।

सज्दे का वर्णन

रूकूउ से खड़े होने के बाद क़ोमा की दुआएँ समाप्त हो जाने पर सजदे में जाते समय पहले ज़मीन पर दोनों हाथों को रखें उसके बाद घुटनों को (अबू दाऊद)। सज्दे में नाक, माथा, दोनों हाथ ज़मीन पर इस प्रकार रखें की हाथ बगल से दूर रहें (बुख़ारी)। और छाती, पेट और जाँघ ज़मीन से ऊँची रखें (अबूदाऊद)। सजदे में शरीर के सात अंग का ज़मीन पर लगना अनिवार्य है, माथा, दोनों हाथ, दोनों घुटने और दोनों पैर के पंजे (मुस्लिम)।

सज्दे की यही विधि औरत और मर्द दोनों के लिए है, औरत के लिए अलग विधि का सज्दा सिद्ध नही है।

सज्दे की दुआ

سبحان ربي الاعلى

सुब्हान रब्बिअल आला।(तीन बार) (त्रिमिज़ी)

पवित्र है मेरा महान प्रभु।

और फिर " अल्लाहु अकबर " कहते हुए जलसा

इस्तराहत की स्थिति में बैठेंगे।

जलसा इस्तराहत (सजदे के बाद बैठने) का वर्णन

सजदे से पहले सिर उठाकर उल्टा (बायाँ) पैर बिछाकर उस पर बैठें और सीधा (दाहिना) पैर खड़ा रखें और सीधा (दाहिना) हाथ दाहिने जाँघ पर और बायाँ हाथ बायीं जाँघ पर इस प्रकार रखें कि उँगलियाँ किबला की ओर और घुटने के करीब हों (निसाई)। और यह दुआ पढ़ें –

اللهم اغفرلي وارحمني وعافني واهدني وارزقني

अल्लाहुम्मग़फिरली व अरहमनी व आफिनी व हदिनी व अरज़ुक़नी (त्रिमिज़ी) ।

पहले सज्दे की भाँति दूसरे सज्दे में "अल्लाहु अकबर" कहते हुए जायेंगे और फिर सजदे की दुआ तीन बार पढ़कर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए, दूसरी और चौथी रकाअत के लिए खड़े होंगे। मगर जलसा इस्तराहत करके खड़ा होना चाहिए (बुख़ारी)। जलसा इस्तराहत के बाद

दूसरी या चौथी रकाअत के लिए और क़ाअद: ऊला (पहली बैठक) के बाद तीसरी रकाअत के लिए उठते समय पहले दोनों घुटनों को, फिर दोनों हाथों को उठायें।

तशहुद की दुआ

पहले क़ाअद: (दूसरी रकाअत के दूसरे सजदे के बाद की बैठक) में सजदे के मध्य जिस प्रकार बैठते हैं (जलसा इस्तराहत) उसी प्रकार बैठकर यह दुआ पढ़े :–

التحيات لله والصلوات والطيبات السلام عليك ايها النبي ورحمة الله وبركاته السلام علينا وعلى عبادالله الصالحين ، اشهد ان لااله الاالله واشهد ان محمدا عبده ورسوله .

अत्तहिय्यातो लिल्लाहि वस्सलावातो, वत्तय्यिबातो,

सारी प्रशंसा और नमाज़ें और पाक वस्तुऐं अल्लाह के लिए है।

अस्सलामो अलैका अय्योहन्नबीयो,

ऐ नबी आप पर सलाम हो,

व रहमतुल्लाहि व बरकातुह ,
और अल्लाह की रहमत और उस की बरकत अवतारित हो ,
अस्सलामो अलैना व अला इबदिल्लाहिस्सालिहीन,
सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर ,
अशहदो अल्लाइलाहा इल्लल्लाह,
मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने के योग्य नही है ,
व अशहदो अन्ना मुहम्मदन अब्दहू व रसूलूह।
और गवाही देती हूँ कि बेशक मुहम्मद स०अ०व० उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। (सर्वमान्य)

पहले क़ाअद: और दूसरे क़ाअद: में तशहद की दुआ पढ़ते समय दायें हाथ की उँगली को मोड़कर कलमें की उँगली को खुली रखकर और उससे इशारा करना चाहिए। तीन और चार रकाअत वाली नमाज़ों में पहले क़ाअद: से उठने के बाद " अल्लाहु अकबर " कहते हुए रफ़ा–ए–दैन करना चाहिए (बुख़ारी)।

फ़र्ज की तीसरी और चौथी रकाअतों में सिर्फ सूरः फातिहा पढ़ना चाहिए (बुख़ारी व मुस्लिम)।

अन्तिम क़ाअदः (अन्तिम बैठक)

अन्तिम बैठक में बैठने के लिए सीधा (दायाँ) पैर किबला की ओर करके खड़ा रखकर और उल्टे (बायाँ) पैर को बिछाकर उस पर बैठा जाये। इस प्रकार से बैठने को "तवर्रूक" कहते हैं, फिर तशहद (अत्तहियात) पढ़ने के बाद दरूद शरीफ पढ़ें।

दरूद शरीफ

اللهم صل على محمد وعلى ال محمد كما صليت على ابراهيم وعلى ال ابراهيم انك حميد مجيد ـ اللهم بارك على محمد وعلى ال محمد كما باركت على ابراهيم وعلى ال ابراهيم انك حميد مجيد .

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिंव व अला आले मुहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा इन्नका हमीदुम मजीद

। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आले मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला अले इब्राहीमा इन्नका हमीदुम मजीद। (बुख़ारी)

दरूद शरीफ की बाद की दुआऐं

اللهم اني ظلمت نفسي ظلما كثيرا ولايغفر الذنوب الا انت فاغفرلي مغفرة من عندك وارحمني انك انت الغفور الرحيم

१- अल्लाहुम्मा इन्नी ज़लमतो नफ़सी जुल्मन कसीरंव्व ला यग़फिरूज़ुनोबा इल्ला अन्ता फ़अग़फ़िरली मग़फ़िरतम मिन इन्दिका व अरहमनी इन्नका अन्तल ग़फ़ूरर्हीम। (बुख़ारी व मुस्लिम)

(अर्थ :– ऐ अल्लाह मैंने अपनी जान पर बहुत जुल्म किया है, और तेरे अतिरिक्त पापों को क्षमा करने वाला कोई नही , बस तू ही अपनी कृपा विशेष से मुझे क्षमा कर दे और मुझ पर दया कर, बेशक तू क्षमा करने वाला, कृपालु है।)

اللهم اني أعوذبك من عذاب القبر وأعوذبك من فتنة المسيح الدجال وأعوذبك من فتنة المحيا و فتنة الممات ، اللهم اني

أعوذبك من المأثم والمغرم

२- अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ोबिका मिन अज़ाबिल क़बरि व अऊज़ोबिका मिन फ़ितनतिल मसीहिद्दज्जाल व अऊज़ोबिका मिन फ़ितनतिल महयाव फ़ितनतिल ममात। अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ोबिका मिनलमअसिमि व मिनल मग़रम । (बुख़ारी व मुस्लिम)

(अर्थः– ऐ अल्लाह ! तेरी शरण चाहता हूँ कब्र के अज़ाब से और तेरी शरण चाहता हूँ मसीह दज्जाल के फितने से और शरण चाहता हूँ जीवन और मृत्यु के फ़ितने से। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी शरण चाहता हूँ पाप और उधार से।)

इसके बाद अपना मुहँ सीधी (दाहिनी) ओर करते हुए कहें " السلام عليكم ورحمة الله "अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह (अर्थः– सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत) और वहीं से चेहरे को उल्टी (बायीं) ओर घुमाते हुए उसी प्रकार कहें , अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह (अर्थः– सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत) । (

अबू दाऊद)

सलाम के बाद की दुआएँ एवं अज़कार

सलाम फेरने के बाद इमाम व मुक़तदी को चाहिए कि ज़ोर से " अल्लाहु अकबर " कहें, और तीन बार "अस्तग़फ़िरूल्लाह " कहें , । (मुस्लिम) फिर यह दुआ पढ़े :–

رب أعني على ذكرك وشكرك و حسن عبادتك

रब्बि अईन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुस्नि इबादतिक।

(अर्थ:– मेरे रब मेरी सहायता कर अपने ज़िक्र पर और अपने शुक्र पर और अपनी अच्छी इबादत पर)।

لآ اله الا الله وحده لاشريك له له الملك وله الحمد وهو على كل شئ قدير ـ اللهم لامانع لما أعطيت ولامعطي لما منعت ولاينفع ذاالجد منك الجد

लाइलाहा इल्लल्लाह वहदहू लाशरीका लहु , लहुलमुल्को व लहुलहमदो व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर। अल्लाहुम्मा ला मानेअ लिमा आतैता व ला मुतीअ लिमा मनअता व ला

यनफ़ऊ ज़ल्जद्दि मिन्कलजद्द। (बुख़ारी व मुस्लिम)
(अर्थः– अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूजने योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साथी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए सब प्रशंसा है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह! जो कुछ तू दे उसको कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू रोक दे उसको कोई देने वाला नहीं और धनी को उसका धन तेरे प्रकोप से फायदा न देगी।)

اللهم اني أعوذبك من الجبن وأعوذبك من البخل وأعوذبك من أرذل العمر وأعوذبك من فتنة الدنيا و عذاب القبر

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ोबिका मिनलजुबुनि व अऊज़ोबिका मिनलबुख़लि व अऊज़ोबिका मिन अरज़लि लउमरि व अऊज़ोबिका मिन फ़ितनतिद दुनिया व अज़ाबिल क़बर। (बुख़ारी)
(अर्थः– ऐ अल्लाह! तेरी शरण चाहता हूँ, कायरता से और तेरी शरण चाहता हूँ कंजूसी से, और तेरी शरण चाहता हूँ बुरे जीवन से और तेरी शरण चाहता हूँ दुनिया और क़बर के प्रकोप से।)

इन दुआओं के अतिरिक्त ३३ बार

سبحان الله " सुबहानल्लाह " और ३३ बार الحمد لله " अलहमदोल्लिलाह " और ३३ बार الله اكبر " अल्लाहु अकबर " और एक बार

لااله الا الله وحده لاشريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كل شئ قدير " लाइलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहु लहुल मुल्को, व लहुल हमदो वहुवा अला कुल्लि शैइन कदीर " पढ़ें। इन दुआओं के बाद आख़िर में आयतल कुर्सी पढ़ें।

आयतल कुर्सी

الله لآ اله الا هو الحى القيوم ، لاتاخذه سنة ولا نوم ، له ما في السماوات ومافي الارض من ذاالذى يشفع عنده الا باذنه يعلم مابين أيديهم وما خلفهم ولايحيطون بشئ من علمه الا بما شاء ، وسع كرسيه السماوات والارض ، ولا يوءده حفظهما وهو العلي العظيم

(अर्थ:– अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नही है वह सदैव जीवित रहने वाला, सबको क़ायम रखने वाला है। उसको न ऊँघ आती है, न नींद। आसमान और ज़मीन की सब चीज़ें उसी की है। कौन है, जो उसके पास किसी की सिफारिश करे

उसकी आज्ञा के बिना। वह जानता है, जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है। और लोग उसके ज्ञान में से कुछ घेर नहीं सकते। मगर जितना अल्लाह चाहे। और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीनों को अपने अन्तर्गत ले रखा है, और उनकी रक्षा उसको थकाती नहीं और वह अत्यन्त महानता वाला है।)

वित्र की नमाज़

वित्र की नमाज़ एक रकाअत या तीन रकाअत पढ़नी चाहिए। वित्र रात की आख़िरी नमाज़ है।

दुआ–ए–क़नूत–ए–वित्र

वित्र की आखिरी रकाअत में रकूउ के बाद क़नूत की यह दुआ पढ़नी चाहिए।

اللهم اهدني فيمن هديت وعافني فيمن عافيت وتولني فيم توليت وبارك لي فيما أعطيت وقني شر ما قضيت فانك تقضي ولا يقضى عليك انه لا يذل من واليت ولا يعز من عاديت تباركت ربنا

وتعاليت نستغفرك ونتوب اليك

अल्लाहुम्मा अहदिनी फ़ीमन हदैत व आफ़ीनी फ़ीमन आफ़ैत व तवल्लनी फ़ीमन तवल्लैत व बारिक ली फ़ीमा आतैत वक़िनी शर्रमा क़दैत। फ़इन्नका तक़दिवला युक़दा अलैक इन्नहू ला यज़िल्लो मंव वालैत व ला यइज़्ज़ो मन आदैत तबारकता रब्बना व तआलैत नस्तग़फ़िरोका वनूतोबो इलैक।

(त्रिमिज़ी)

(अर्थ:– ऐ अल्लाह! मुझको हिदायत दे उन लोगों के साथ में जिनको तूने हिदायत दी, और आफ़ियत दे मुझको उन में जिनको तूने आफ़ियत दी और दोस्त रख मुझको उन लोगों में जिनको तूने दोस्त रखा और बरकत दे मुझको उस नेमत में जो तूने मुझे दी, और महफ़ूज़ रख मुझ को उस शर से जिसका तूने फ़ैसला किया है, तू ही फ़ैसला करता है, तेरे ऊपर किसी का फ़ैसला नहीं होता, जिसको तू दोस्त रखे उसे कोई ज़लील करने वाला नहीं और जिसको तू दुश्मन बना ले उसको कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं। बरकतवाला है तू, ऐ हमारे रब! महान है। हम

तुझसे मग़फ़िरत चाहते हैं और तुझसे तोबा करते हैं।)

वित्र के बाद का ज़िक्र या दुआ

वित्र का सलाम फेरने के बाद तीन बार यह कहना चाहिए :–

سبحان الملك القدوس

" सुब्हानलमालिकिल क़ुद्दूस " तीसरी बार ज़ोर से खींचकर कहें। (अबू दाऊद)

क़नूत–ए–नाज़ला

युद्ध और शत्रु के विजय के भय के समय इस दुआ–ए–क़नूत को पढ़ना चाहिए। इस को क़नूत–ए–नाज़ला कहते हैं। यह दुआ निम्नलिखित है:–

اللهم اغفر لنا وللمومنين والمومنات والمسلمين والمسلمات وألف بين قلوبهم واصلح ذات بينهم وانصرهم على عدوك وعدوهم - اللهم العن الكفرة الذين يصدون عن سبيلك ويكذبون رسلك ويقاتلون أولياءك اللهم خالف بين كلمتهم وزلزل اقدامهم وانزل بهم بأسك الذى لاترده عن القوم المجرمين اللهم انا نجعلك في

نحورهم ونعوذبك من شرورهم

अल्लाहुम्मग़्फ़िरलना वलिलमोमिनीना वल मोमिनात वल मुस्लिमीना वल मुस्लिमात व अल्लिफ़ बैना क़ुलूबिहिम व अस्लिह ज़ात बैनिहिम वनसुरहुम अला अदुव्विका व अदुव्विहिम अल्लाहुम्मल अनिलकफ़रता अल्लज़ीना यस्वुद्दूना अन सबीलिका व युकज़्ज़िबूना रूसूलका व युक़ातिलूना औलियाअका। अल्लाहुम्मा ख़ालिफ़ बैना कलिमतिहिम व ज़ल्ज़िल अक़दाहुम व अन्ज़िल बिहिम बासकल्लज़ी ला तरूद्दुहू अनिलक़ौमिल मुजिरिमीन। अल्लाहुम्मा इन्ना नजअलुका फ़ी नुहूरिहिम व नऊज़ुबिका मिन शुरूरिहिम। (हिस्न हसीन)

(अर्थः– ऐ अल्लाह! क्षमा कर हमको ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को, और मुस्लमान मर्द और मुसलमान औरतों को, और उनके दिलों के मध्य लगाव पैदा कर दे, और उनमें संधि मिलाप करा दे, और अपने एवं उनके शत्रुओं पर उनकी सहायता कर। ऐ अल्लाह! उन काफ़िरों

पर लानत फ़रमा जो तेरी राह से रोकते हैं , और तेरे रसूलों को झुठलाते हैं , और तेरे मित्रों से युद्ध करते हैं , ऐ अल्लाह ! उनके मध्य फूट डाल दे और उनके पैर डगमगा दे , और उन पर अपना अज़ाब नाज़िल फरमा , जिसको तू मुजरिमों से नही लौटाता। ऐ अल्लाह ! हम तुझको उनके मुकाबले में करते हैं , और उनके शर से तेरी शरण चाहते हैं ।)

नमाज़ के लिए आवश्यक बातें

१- नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने से सत्ताईस गुना सवाब है। (बुख़ारी व मुस्लिम)
२- इमाम के साथ एक आदमी भी हो तो जमाअत हो जाती है। (बुख़ारी व मुस्लिम)
३- पंक्तियों (सफों) को सीधी करने से नमाज पूरी होती है। (त्रिमजी)
४- पंक्तियों (सफों) में बीच में जगह खाली नहीं छोड़ना चाहिए। (अबू दाऊद)
५- यात्री चार रकाअत वाली नमाज़ को क़सर करके दो रकाअत पढ़े। (मसनद–ए–अहमद)

६- यात्रा में दो समय की नमाज़ एक साथ पढ़ना जायज़ है। (मसनद–ए–अहमद)
७- नमाज़ी भूलकर नमाज़ कम या ज्यादा पढ़ ले तो सिजद: सहू करना मसनून है, कमी की हालत में कमी पूरा करने के बाद सज्द: सहू करना चाहिए।
८- सज्द:सहू सलाम फेरने से पहने करना चाहिए। (बुख़ारी)

जुमे का वर्णन

जुमे की नमाज़ दो रकाअत फ़र्ज़ है। जुमे का समय जुहर का समय है।(बुख़ारी) । देहात, शहर और हर स्थान पर जुमा फ़र्ज़ है। जुमे का खुत्बा वाजिब है। जुमे के दिन खुत्बे से पहले जितनी चाहें सुन्नतें पढ़ें। जुमे के बाद चार रकाअत सुन्नत पढ़ना अफ़ज़ल और बेहतर है , और दो रकाअत भी पढ़ना जायज़ है , अगर दो रकाअत ही पढ़ना है तो घर जाकर पढ़ना बेहतर है। जो व्यक्ति अज़ान के बाद मस्जिद में आए और इमाम खुत्बा दे रहा हो तो उसको दो रकाअत नमाज़ पढ़कर खुत्बा सुनना

चाहिए। (मुस्लिम)

ईदैन की नमाज़ का वर्णन

ईदैन की नमाज़ केवल दो रकाअत सुन्नत मुअक्किद: है। ईदैन की नमाज़ सुबह सबेरे दिन निकलते ही पढ़नी अफ़ज़ल है। नमाज़ ईदैन के लिए न अज़ान कहनी चाहिए और न इक़ामत (सर्वमान्य) । ईदैन की पहली रकाअत में तकबीर तहरीमा के बाद सात तकबीरें और दूसरी रकाअत में पाँच तकबीरें कहनी चाहिए। हर तकबीर के साथ रफाअ दैन करना जायज़ है, ईदैन की नमाज़ से पहले और बाद में कोई सुन्नत और नफिल नही पढ़नी चाहिए।

ईदैन की तकबीर

ईदगाह को जाते और वापस आते हुए ऊँची आवाज़ से यह तकबीर पढ़नी चाहिए।

الله أكبر الله أكبر لا اله الا الله والله أكبر الله أكبر ولله الحمد

अल्लाहु अकबर–अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाह व अल्लाहु अकबर–अल्लाहु अकबर व लिल्लाहि हमद।

(अर्थः– अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूजने योग्य नहीं। और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है।)

नमाज़ – जनाज़: का वर्णन

नमाज़ जनाज़: के लिए सब नमाज़ों की तरह, वज़ू, क़िबले की ओर मुँह, बदन ढका, नीयत ज़रूरी है। जनाज़: में चार तकबीर कहना चाहिए। नमाज़ जनाज़: में भी सूरः फातिहा पढ़ना ज़रूरी है। (बुख़ारी)

जनाज़े की नमाज़ की दुआ व विधि

पहली तकबीर के बाद सूरः फातिहा और कोई दूसरी सूरः मिलाकर पढ़नी चाहिए। (बुख़ारी)।

दूसरी तकबीर के बाद दरूद शरीफ पढ़ना चाहिए।
तीसरी तकबीर के बाद निम्नलिखित दुआऐं पढ़ें :-

اللهم اغفر لحينا وميتنا وشاهدنا وغائبنا وصغيرنا وكبيرنا وذكرنا وأنثانا۔ اللهم من أحييته منا فأحيه على الاسلام و من توفيته منا فتوفه على الايمان ۔ اللهم لاتحرمنا أجره ولا تفتنا بعده

अल्लहुम्मग़फ़िर लिहय्यिना व मय्यितना व शाहिदना व ग़ाइबना व सग़ीरिना व कबीरना व ज़करिना व उन्सानना। अल्लाहुम्मा मन अहय्यतहू मिन्ना फ़ाअहियिही अललइस्लामि व मन तवफ़्फ़यतहू मिन्ना फ़तवफ्फहू अललईमान। अल्लाहुम्मा ला तहरिमना अजरहू व ला तफितन्ना बादहु। (मुस्लिम)

اللهم اغفرله وارحمه وعافه وأعف عنه وأكرم نزله ووسع مدخله واغسله بالماء والثلج والبرد ونقه من الخطايا كما نقيت الثوب الابيض من الدنس وأبدله دارا خيرا من داره وأهلا خيرا من أهله وزوجا خيرا من زوجه وأدخله الجنة وأعذه من عذاب القبر و عذاب النار

अल्लाहुम्मग़फ़िरलहू व अरहमहू व आफीही व आफो अनहू व अकरिम नुज़ूलहू व वस्सीअ मदख़लहू व अग़सिलहू बिलमाइ वस्सलजि

वलबरदिवनक़्कहीमिननलख़तायाकमा नक़्क़यतस्सो बलअबयद मिनददनसि व अबदिलहू दारन ख़ैरममिनदारिही व अहलन ख़ैरनम्मिन अहलहि व ज़ौजन ख़ैरम्मिन ज़ौजिही व अदख़िलहुलजन्नता व अइज़हु मिन अज़ाबिलक़बर व अज़ाबिन्नार। (मुस्लिम)

(अर्थ:– ऐ अल्लाह! क्षमा कर हमारे जीवितों को और हमारे मुर्दों को हमारे उपस्थिति को और हमारे अनुपस्थिति को हमारे छोटों को और बड़ों को और हमारे पुरूषों को और हमारी स्त्रियों को। ऐ अल्लाह! हम में से जिनको तू जीवित रखे उसको इस्लाम पर जीवित रख और हम में से जिसको मृत्यु दे, तो उसको ईमान पर मृत्यु दे। । ऐ अल्लाह! हमको इसके पुण्य से वंचित न रखना और उसके बाद हमको बुराईयों में मत डालना। ऐ अल्लाह! इसको क्षमा कर दे और इस पर कृपा कर इसको शान्ति दे और इसको क्षमा कर और इसकी मेहमानी इज़्ज़त के साथ कर इसकी क़बर को फैला दे। और इसके पाप को पानी, बर्फ और ओले से धो दे , और इसकी ग़लतियों को इस प्रकार साफ कर दे

जिस प्रकार तूने सफेद कपड़ा मैल से साफ किया और इसके घर से अच्छा घर बदल दे और इसके घरवालों से अच्छे घरवाले बदल दे और इसकी पत्नी से अच्छी पत्नी बदल दे और इसको जन्नत में प्रवेश फरमा और इसको क़बर के अज़ाब से और नरक के अज़ाब से बचा।)

अगर बच्चे का जनाज़ा हो तो तीसरी तकबीर के बाद " اللهم اغفر لحينا ومیتنا अल्लाहुम्मग़फ़िर लिहय्यिना व मइय्यतिना " पढ़कर यह दुआ पढ़ी जाए :–

اللهم اجعله لنا سلفا وفرطا وأجرا

अल्लाहुम्मअजअलह लना सलफ़न व फ़रतव्व अजरा। (बुख़ारी)

(अर्थ:– ऐ अल्लाह! इसको हमारे लिए पेश रौव और पहले से सामान करने वाला और सवाब का ज़रिया बना दे।)

पुरूष का जनाज़ा हो तो इमाम को मृतक के सिर के पास खड़ा होना चाहिए , अगर औरत का जनाज़ा हो तो इमाम को जनाज़ा के मध्य के भाग के निकट खड़ा होना चाहिए। (अबू दाऊद)

محتويات هذا الكتاب :

١ - كيف تتوضأ .

٢ - صفة صلاة الرسول صلى الله عليه وسلم .

٣ - صلاة الوتر .

٤ - صلاة الجمعة والعيدين .

٥ - صلاة الجنائز .

كتاب الصلاة

باللغة الهندية

تأليف

الشيخ مختار أحمد الندوي

ترجمة

سيد زاهد و محمد طاهر

كتاب الصلاة

تأليف

الشيخ مختار أحمد الندوي

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالنسيم

الرياض ـــ حي المنار ـ مقابل العيادات الخارجية لمستشفى اليمامة

هاتف: ٢٣٢٨٢٢٦ ـ ٢٣٥٠١٩٤ فاكس: ٢٣٠١٤٦٥

ص.ب: ٥١٥٨٤ الرياض ١١٥٥٣